

७. अकथ कथ्यौ न जाड़

- संत नामदेव

परिचय

जन्म : १२७०, सातारा (महाराष्ट्र)

मृत्यु : १३५०, पंढरपुर (महाराष्ट्र)

परिचय : संत नामदेव का महाराष्ट्र में वही स्थान है जो संत कबीर अथवा संत सूरदास का उत्तर भारत में है। विठ्ठल भक्ति आपको विरासत में मिली। आपका संपूर्ण जीवन मानव कल्याण में समर्पित रहा। आप अपनी उच्चकोटि की आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए विख्यात हुए। विश्व में आपकी पहचान 'संत शिरोमणि' के रूप में है। आपने पंजाबी, मराठी और हिंदी में रचनाएँ की हैं।

प्रमुख कृतियाँ : संत नामदेव की 'अभंग गाथा' (लगभग २५०० अभंग) प्रसिद्ध हैं। आपने हिंदी भाषा में भी कुछ अभंगों की रचना (लगभग १२५) की है।

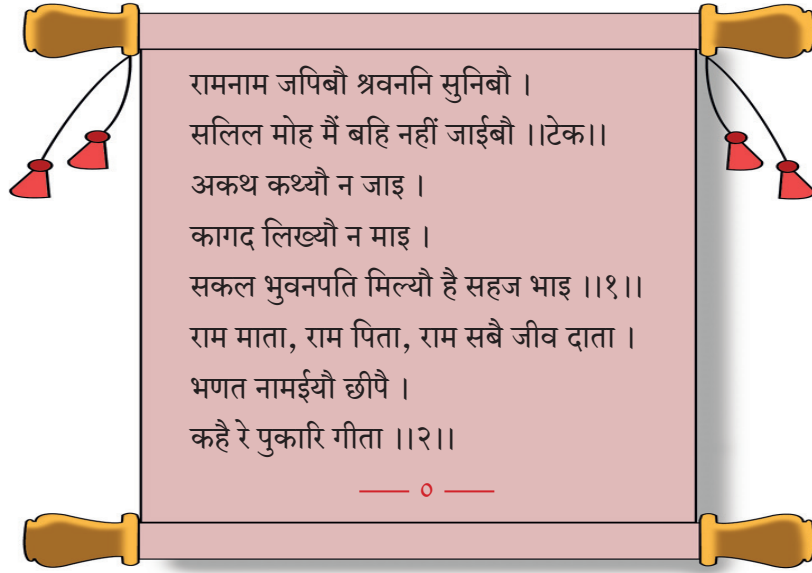
पद्य संबंधी

प्रस्तुत पदों में संत नामदेव ने 'राम नाम' की महिमा का गुणगान किया है। संत नामदेव का कहना है कि 'राम नाम' का जाप ही खेती-बारी है। 'राम नाम' ही जीवन का आधार है। इसी 'राम नाम' का जाप ऋषि-मुनि करते रहते हैं। इसी नाम का जप और श्रवण द्वारा जीवन-मरण से मुक्ति मिल सकती है।

राम नाम षेती राम नाम बारी ॥
हमारै धन बाबा बनवारी ॥टेक॥
या धन की देशहु अधिकाई ।
तसकर हरै न लागै काई ॥१॥
दहदिसि राम रह्या भरपूरि ।
संतनि नीयरै साकत दूरि ॥२॥
नामदेव कहै मेरे क्रिसन सोई ।
कूंत मसाहति करै न कोई ॥३॥

राम सो नामा नाम सो रामा ।
तुम साहिब मैं सेवग स्वामा ॥टेक॥
हरि सरवर जन तरंग कहावै ।
सेवग हरि तजि कहुं कत जावे ॥१॥
हरि तरवर जन पंषी छाया ।
सेवग हरिभजि आप गवाया ॥२॥

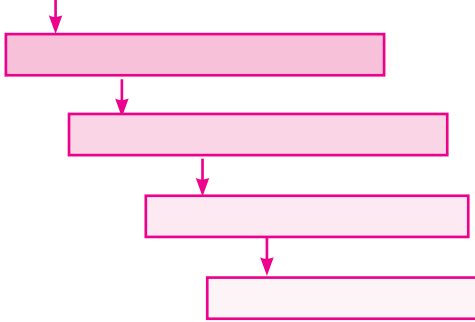
जन नामदेव पायो नांव हरी ।
जम आय कहा करिहै बौरै ।
अब मोरी छूटि परी ॥टेक॥
भाव भगति नाना बिधि कीन्ही ।
फल का कौन करी ।
केवल ब्रह्म निकटि ल्यौ लागी ।
मुक्ति कहा बपुरी ॥१॥
नांव लेत सनकादिक तारे ।
पार न पायो तास हरी ।
नामदेव कहै सुनौ रे संतौ ।
अब मोहिं समझि परी ॥२॥



स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संत नामदेव का ईश्वर के साथ रिश्ता इन उदाहरणों द्वारा व्यक्त हुआ है :



(३) लिखिए :

१. पद्य में प्रयुक्त कृष्ण के नाम

२. नामदेव जी द्वारा दी गई सीख

(२) पद्य में इस अर्थ में आए शब्द :

१. जल =
२. कान =
३. वृक्ष =
४. दिशा =

(४) पद की प्रथम दो पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए :



निम्नलिखित सुवचन पर आधारित कहानी लिखिए :
 'स्वास्थ्य ही संपदा है ।'

